

हनुमदष्टकम्

Hanumadashtakam

[sanskritdocuments.org](http://sanskritdocuments.org)

February 19, 2019

---

# Hanumadashtakam

---

## हनुमदष्टकम्

---

### Sanskrit Document Information



---

Text title : hanumadaShTakam

File name : hanumadaShTakam.itx

Category : hanumaana, hanuman, aShTaka

Location : doc\_hanumaana

Proofread by : Aruna Narayanan narayanan.aruna at gmail.com

Description/comments : Brihat Stotra Ratnakar Shivadutta Shastri

Latest update : February 19, 2019

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

February 19, 2019

*sanskritdocuments.org*

---



हनुमदष्टकम्



वीर! त्वमादिथ रविं तमसा त्रिलोकी  
व्याप्ता भयं तदिह कोऽपि न हर्त्तुमीशः ।  
देवैः स्तुतस्तमवमुच्य निवारिता भी-  
र्जानाति को न भुवि सङ्कटमोचनं त्वाम् ॥ १ ॥

भ्रातुर्भयादवसदद्रिवरे कपीशः  
शापान्मुने रघुवरं प्रतिवीक्षमाणः ।  
आनीय तं त्वमकरोः प्रभुमार्त्तिहीनं  
जानाति को न भुवि सङ्कटमोचनं त्वाम् ॥ २ ॥

विज्ञापयञ्जनकजा -स्थितिमीशवर्यं  
सीताविमार्गणपरस्य कपेर्गणस्य ।  
प्राणान् ररक्षिथ समुद्रतटस्थितस्य  
जानाति को न भुवि सङ्कटमोचनं त्वाम् ॥ ३ ॥

शोकान्वितां जनकजां कृतवानशोकां  
मुद्रां समर्प्य रघुनन्दननामयुक्ताम ।  
हत्वा रिपूनरिपुरं हुतवान् कृशानौ  
जानाति को न भुवि सङ्कटमोचनं त्वाम् ॥ ४ ॥

श्रीलक्ष्मण निहतवान् युधि मेघनादो  
द्रोणाचलं त्वमुदपाटय औषधार्थम् ।  
आनीय तं विहितवानसुमन्तमाशु  
जानाति को न भुवि सङ्कटमोचनं त्वाम् ॥ ५ ॥

युद्धे दशास्यविहिते किल नागपाशै-  
र्बद्धां विलोक्य पृतनां मुमुहे खरारिः ।  
आनीय नागभुजमाशु निवारिता भी-  
र्जानाति को न भुवि सङ्कटमोचनं त्वाम् ॥ ६ ॥

भ्रात्रान्वितं रघुवरं त्वहिलोकमेत्य  
देव्यै प्रदातुमनसं त्वहिरावणं त्वाम् ।  
सैन्यान्वितं निहतवाननिलात्मजं द्राक्  
जानाति को न भुवि सङ्कटमोचनं त्वाम् ॥ ७ ॥

वीर! त्वया हि विहितं सुरसर्वकार्यं  
मत्सङ्कटं किमिह यत्त्वयका न हार्यम् ।  
एतद् विचार्य हर सङ्कटमाशु मे त्वं  
जानाति को न भुवि सङ्कटमोचनं त्वाम् ॥ ८ ॥

रक्तवर्णो महाकायो रक्तलाङ्गुलवाञ्छुचिः ।  
हनूमान् दुष्टदलनः सदा विजयतेतराम् ॥ ९ ॥

हनुमदष्टकमेतदनुत्तमं सुकवि-भक्त-सुधी-तुलसीकृतम् ।  
कपिलदेवबुधाऽनुकृतं तथा सुरगिराऽभयदं सकलार्थदम् ॥ १० ॥

इति वाराणसेय-संस्कृत-विश्वविद्यालय-व्याख्याता-  
पण्डितश्रीकपिलदेवत्रिपाठिना विरचितं हनुमदष्टकं समाप्तम् ।

Proofread by Aruna Narayanan narayanan.aruna at gmail.com

---



*Hanumadashtakam*

pdf was typeset on February 19, 2019



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

